ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 171-173**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास के सम्बंध में माल्थस की विचार धारा– एक का विश्लेषण (भारतीय अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में)

1. डॉ0 आर. बी. एस एस चौहान
2. सरला पाण्डेय

1. विभागाध्यक्ष, सं.गो. स्मृति शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, विशेष 2. शोध अध्येत्री अवधेश प्रताप सिंह वि. रीवा (म.प्र.) भारत

Received-14.11.2024, Revised-19.11.2024, Accepted-25.11.2024 E-mail : aaryvart2013@gmail.com

सारांशः विकास मानवीय प्रयत्नों का परिणाम है। समग्र विकास की अधोसंरचना में मानव संसाधन महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करते है। यद्यपि कार्यशील जनसंख्या देश के आर्थिक विकास में सहायक है, किन्तु आश्रित जनसंख्या का बढ़ता हुआ भार आर्थिक विकास को वांछिन गति नही प्रदान कर सकता। ऐसी स्थिति में बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, एवं जनाधिक्य की समस्या जैसी महामारियों ने आर्थिक विकास के मार्ग को पूर्णतः अवरुद्ध कर दिया। पूँजी निर्माण की समस्या, उच्च जीवन स्तर एवं विकास के स्तर को उन्नत बनाए रखने हेतु अनेक प्रयास अपनाए गये किन्तु तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के परिणामस्वरूप इनका निदान संभव नही हो सका।

कुंजीभूत शब्द– जनसंख्या वद्धि, आर्थिक विकास, समग्र विकास, अधो संरचना, बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी, जनाधिक्य

जनसंख्या वृद्धि के कारण जहाँ एक ओर जनसंख्या का दबाव बढ़ता हुआ दिखाई पड़ रहा था वहीं दूसरी ओर कृषि की बिगड़ती हुई दशा ने अनेक संकटो को उत्पन्न कर जीवन को कष्ट मय का बना दिया था। इतना ही नही इस समय औद्योगिक क्रान्ति और पूँजीवादी व्यवस्था के अनेक दोष उभर कर सामने आये जिनके परिणाम स्वरूप देश में चारों ओर दरिद्रता का साम्राज्य फैला हुआ था। देश की सम्पूर्ण जनता जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री के असंतुलन से पीड़ित थी। माल्थस के द्वारा दिया गया सिद्धांत इन्हीं परिस्थितियों की उपज है।

माल्थस द्वारा कई विचारकों से प्रभावित होकर यह सिद्धांत प्रस्तुत किया गया। इन विचारकों का मत था कि प्रायः जनसंख्या में वृद्धि, मृत्यु दर से अधिक होती है। अतः यदि जनसंख्या के इस अतिरेक को नियमित नही किया गया, तो यह वृद्धि अनेक कष्टों को जन्म देगी। सर मैथ्यू हेले ने अपनी पुस्तक ष्जिम च्तपउपजपअम वतहंदप्रंजपवद व ि्डंदापदकष् में जनसंख्या वृद्धि के ज्यामितीय अनुपात की प्रकृति पर प्रकाश डालते हुए स्पष्ट किया कि प्रत्येक विवाहित जोड़ा औसतन 6 बच्चे पैदा करता है। ऐसे मे 34 वर्षों में जनसंख्या दुगुना हो जाएगी।

उपर्युक्त तात्कालिक परिस्थितियाँ एवं जनसंख्या सबंधी आशावादी विचार माल्थस के लिए चुनौती पूर्व साबित हुए। इन्ही युनौतियों से प्रेरित होकर ने सिद्धांत की व्यारका प्रस्तुत की। यद्यपि अनेक आशावादी विचारक जनसंख्या सम्बंधी विचाओं को व्यक्तिगत निरीक्षण तथा निराशावादी कहकर उपेक्षित करते हैं किन्तु माल्थस का निबंध जनसंख्या विज्ञान का आरंभिक एवं आधारभूत विन्दु है।

जनसंख्या वृद्धि एवं आर्थिक विकास के सम्बंध में माल्थस की विचार धारा– माल्थस द्वारा 1998 में ष्जनसंख्या के सिद्धांत पर एक लेख (An Essay on the principle of Population,1798) में जनसंख्या से सम्बंधित सिद्धांत दिया गया। माल्थस द्वारा अल्पकालीन धन की वृद्धि में अधिक रुचि ली गयी एवं दीर्घकालीन विकास की उपेक्षा की गयी। इन्होंने विकास को प्रोत्साहित करने वाले तत्वों के स्थान पर विकास मार्ग में आने वाले बाधक तत्वों की व्याख्या प्रस्तुत की। अतः इनका विकास विद्धांत सकारात्मक न होकर नकारात्मक है।

माल्थस के अनुसार ष्आर्थिक विकास का अर्थ मूल्य एवं धन में वृद्धि से लगाया गया है।ष् इन्होंने स्पष्ट किया है कि वितरण क्रिया में सुधार लाकर वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि की जा सकती है। आर्थिक विकास की दृष्टि से माल्थस द्वारा प्रभावशाली मांग की आवश्यकता पर अधिक जोर दिया गया है। इनके द्वारा यह सिद्धांत अनेक तात्कालिक परिस्थितियाँ, प्रचलित आशावादी विचारों एवं यूरोपीय देशों की जनसंख्या के विकास का गहन अध्ययन करने के पश्चात प्रतिपादित किया गया। इन्होंने यूरोपीय देशों की तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या तथा इससे उत्पन्न दुष्परिणाम से आतंकित होकर जनसंख्या सम्बंधी सिद्धांत प्रस्तुत किया। भले ही इन्होंने यह सिद्धांत यूरोपीय देशों की जनसंख्या समस्या के संदर्भ में दिया था किन्तु भारत जैसे अर्द्धविकसित देशों में आज भी जनसंख्या का सिद्धांत एक सीमा तक क्रियाशील है।

माल्थस के सिद्धांत की प्रमुख बातें एवं अर्धविकसित अर्थव्यवस्था– चूंकि शोधार्थी के शोध का विषय ष्जनसंख्या बृद्धि एवं आर्थिक विकास के मध्य मात्रात्मक सम्बंधष् (सीधी जिले के संदर्भ में) है। अध्ययन क्षेत्र की अर्थ व्यवस्था में भारतीय अर्थव्यवस्था की सम्पूर्ण विशेषताएँ पायी जा रही है। ऐसी अर्थव्यवस्था में माल्थस का सिद्धांत निम्न लिखित मान्यताओं पर आधारित है रू

1. माल्थस ने स्त्री पुरुष में काम वासना को स्वाभाविक ही नहीं यथा स्थिर माना है, जिसका सम्बंध संतानोत्पत्ति से होता है।
2. माल्थस ने मानव के जीवन निर्वाह एवं अस्तित्व की रक्षा के लिए खाद्य सामग्री को अनिवार्य माना है।
3. इनके द्वारा आर्थिक सम्पन्नता एवं संतानोत्पत्ति के बीच सीधे सम्बंध की बात कही गयी है।
4. माल्थस ने कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम के क्रियाशील होने की पुष्टि की है। माल्थस के द्वारा जनसंख्या सिद्धांत के सम्बंध में दी गयी उपरोक्त मान्यताएँ भारत जैसे विकास शील देश में एक सीमा तक लागू हो रही है। चाहे सम्पूर्ण क्षेत्र सिंगरौली जिला जनसंख्या एवं आर्थिक विकास के सम्बंध में माल्थस द्वारा प्रस्तुत मान्यताएँ जनसंख्या वृद्धि एवं बढ़ते हुए जनसंख्या घनत्व के कारण कृषि पर बढ़ता हुआ दबाब इस बात की पुष्टि करते हैं कि तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या आर्थिक विकास में बाधक है।

जनसंख्या का ज्यामितिक अनुपात में बढ़ना– माल्थस के द्वारा किया गया। अध्ययन इस तथ्य की पुष्टि करता है कि अद्धविकसित क्षेत्रों में अनियंत्रित जनसंख्या ज्यामितिक दर से बढ़ने की प्रवृत्ति रखती है। इन्होंने स्पष्ट किया कि स्त्रियों एवं पुरुषों के मध्य यौन आकर्षण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। यौन इच्छा प्रवल एवं स्वाभाविक होने के परिणामस्वरूप संतांनोत्पत्ति एक स्वाभाविक परिणाम है। साथ ही माल्थस का कथन है कि ष्अगर जनसंख्या को रोका न गया तो प्रत्येक 25 वर्ष मे जनसंख्या दुगुना होने की प्रवृत्ति रखती है। ज्यामितिक अनुपात को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है– 2, 4, 8, 16, 32, 64, 128,256 आदि इसी क्रम से बढ़ना।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

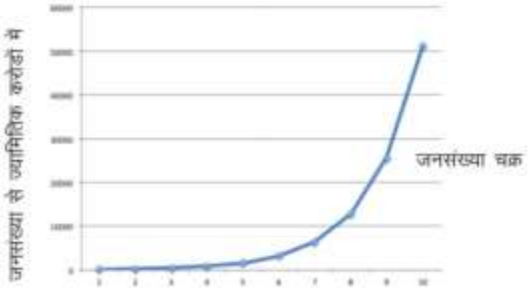

जनसंख्या वृद्धि की यह दर गुणोत्तर वृद्धि दर कहलाती है। जनसंख्या में लगातार होने वाली वृद्धि के आधार पर माल्थस द्वारा स्पष्ट किया गया कि ष्जीविका प्रदान करने वाली भूमि की शक्ति की तुलना में जनसंख्या वृद्धि की दर अनन्त है।

3– खाद्य सामग्री में वृद्धि का अंकगणितीय अनुपात में होना– माल्थस द्वारा यह स्पष्ट किया गया कि मानव जीवन को बनाए रखने के लिए भोजन महत्वपूर्ण है, किन्तु जिस दर से जनसे ख्या में वृद्धि होती है। उस दर से खाद्य सामग्री में वृद्धि नी होगी है। कृषि उत्पादन में उत्पत्ति हास नियम की क्रियाशीलता के कारण जैसे जैसे फसल उगाने का क्रम बढ़ता जाता है, वैसे वैसे क्रमानुसार कृषि उत्पादन घटता जाता है। खाद्य सामग्री में होने वाली अंकगणितीय अनुपात में वृद्धि को उस प्रकार त्यस कर सकते हैं 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8 आदि । मान्यस ने भाग यह तथ्य हराया कि ष्अन्य वाहों के समान होने पर प्रकृति द्वारा जानवीय आहार धीरे धीरे अंक गणितीय अनुपात में बढ़ता हो एवं मानव स्वयं तेजी हे स्वामितीय अनुपात बढ़ता है।

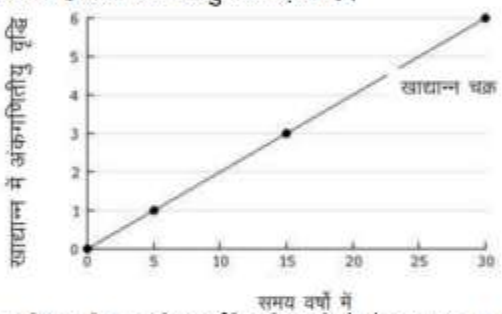

4. माल्थस ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि यद्यपि अर्द्धविकसित देशों में जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री दोनों में वृद्धि होती है, किन्तु दोनों के वृद्धि दर में अंतर होने के बाच्य असंतुलन की स्थिति निर्मित हो जाती है। जैसे यदि उन संख्या 5 वर्षों में खाद्य सामग्री में 1,2,3,4,5 अर्थात् 5 गुना बढ़ती है तो जनसंख्या में इतनी ही अवधि में व्यामितिक अनुपात से 1, 2, 4, 8, 16 अर्थात् 16 गुना बढ़ेगी। माल्थस के अनुसार यह असंतुलन भयंकर एवं कष्ट कारक परिणामो को उत्पन्न करता है। अर्थात् खाद्य सामग्री एवं जीवन स्तर में वृद्धि के साथ–साथ जनसंख्या में भी वृद्धि होती है

"Prosperity was not to depend on depend on Population but Population was not Prosperity."

जनसंख्या पर नियंत्रण –

नैसर्गिक या प्राकृतिक अवरोधः ऐसे अवरोध होते है, जो प्रकृति द्वारा लगाए जाते हैं। इनके परिणामस्वरूप मृत्यु दर मे होने से खाद्य सामग्री से अतिरेक जनसंख्या का भार कम होकर दोनों बराबर हो जाते है। इन अवरोधों में बीमारी, युद्ध, भूकम्प, अकाल, बाढ़ के साथ साथ अन्य कारकों में बच्चों का असंतोषजनक पालन पोषक एवं अस्वस्थता आदि प्रमुख है। इन्होंने इन कारकों को अत्यन्त दुखद एवं कष्टप्रद माना है।

यद्यपि उपरोक्त कारकों द्वारा मृत्यु दर में वृद्धि के परिणाम स्वरूप जनसंख्या घटकर खाद्य सामग्री के बराबर हो जाती हैं, किन्तु यह संतुलन स्थायी न होकर अल्पकालीन होता है। जैसे ही जनसंख्या में पुनः वृद्धि होती है यह संतुलन भंग हो जाता है तथा प्रकृति द्वारा पुनः जनसंख्या संतुलन का चक्र चलता रहता है।

प्रतिवर्धक अवरोधः माल्थस द्वारा इसके अन्तर्गत दो प्रकार के प्रतिबंधों को स्वीकार किया गया है। जिसमें नैतिक प्रतिबंध एवं कृत्रिम साधनों से अवरोध सामिल है। वास्तव में माल्थस ने नैतिक प्रतिबंध को ही मान्यता दी है, जिसमे संयम, ब्रह्मचर्य एवं विलम्ब विवाह आदि के द्वारा जन्मदर को नियंत्रित करने की बात कही गयी है। कृत्रिम साधनो के अन्तर्गत उन समस्त उपायों को शामिल किया गया है, जिन्हें संतति निग्रह के साधन कहा जाता है।

माल्थस के सिद्धांत की आलोचना– माल्थस पहले ऐसे थे जिसने अपने निबंध के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व का ध्यान जनसंख्या वृद्धि की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया। जनसंख्या सम्बंधी विचारों के फलस्वरूप माल्थस ने काफी ख्याति अर्जित की किन्तु कई विद्वानों द्वारा निम्न आधारों पर इनकी आलोचना की गयी।

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

1. माल्थस के द्वारा जनसंख्या सिद्धांत के सम्बंध में दी गयी मान्यताँ पूर्ण रुप से सत्य नही है।
2. माल्थस द्वारा बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण जो भयानक परिणाम प्राप्त किये गये है इतिहास इस तथ्य की पुष्टि नही करता है।
3. यद्यपि कृषि की उन्नत प्राविधियों एवं अन्य साधनों के द्वारा खाद्य उत्पादन में तेजी से वृद्धि हो रही है और खाद्य संकट का खतरा नही है।
4. इनके द्वारा जनसंख्या की तुलना कुल उत्पादन न करके केवल खाद्यान उत्पादन से की है जो किसी भी अर्थ व्यवस्था की आर्थिक स्थिति को द्योतक नहीं है।
5. माल्थस के द्वारा खाद्य सामग्री एवं जनसंख्या वृद्धि का अंकगणितीय एवं ज्यामितिक क्रम ठीक नही है।
6. माल्थस द्वारा जन्म लेने वाले व्यक्तियों को उपभोक्ता के रूप में स्वीकार किया है श्रम शक्ति के रूप में नही।
7. इनके द्वारा जनसंख्या के गुणात्मक पक्ष एवं न्यायपूर्ण वितरण पर स्थान नही दिया गया है।
8. यह सोचना कि जनसंख्या में होने वाली वृद्धि हमेशा हारिकारक होगी सही नही है।
9. माल्थस के द्वारा की गयी भविष्यवाणी गलत है कि अति जनसंख्या वृद्धि की स्थिति में प्राकृतिक अवरोध अनिवार्यतः क्रियाशील हो जाते है।
10. इनके द्वारा जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने वाले प्रतिबंधात्मक अवरोध को संतोषजनक एवं व्यवहारिक नही माना गया है।

निष्कर्ष– भले ही माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की कई आलोचनाएँ की गयी है, फिर भी यदि हम गहराई से अध्ययन करते हैं तो यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि इनके विचारों में आज भी इतनी यथार्थता है कि सारी आलोचनाएँ सत्य है। माल्थसके द्वारा जनसंख्या वृद्धि की भविष्यवाणी आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था में सत्य प्रभावित होती है। विकासशील देशों में कृत्रिम अवरोध के साधनों का बढ़ता हुआ प्रयोग सिद्धांत की प्रभावशीलता को व्यक्त करता है। माल्थस का यह निष्कर्ष आज सत्य साबित हो रहा है कि यदि मानव द्वारा प्रतिबंधों को नही अपनाया गया तो जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ेगी जो अनेक समस्याओं का कारण बनेगी। खाद्यान ही तुलना में जनसंख्या यदि अधिक हो जाती है और प्रतिबंधों के द्वारा जनसंख्या नियंत्रित नही होती तो प्राकृतिक कारणों हो मृत्युदर में वृद्धि होगी यह सत्य है।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट है कि अनेक कमियों के बावजूद भी माल्थस का सिद्धांत सारगर्भित है। इस सम्बंध में बाकर ने लिखा है कि ष्माल्थस के विरुद्ध उठाए गये सम्पूर्ण विवादों के मध्य माल्थसवाद अजेय तथा अविछिन्न रूप से स्थिति है।ष्इति दिक्

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डब्ल्यू एस. थॉमस, पापुलेशन प्राबलम्स, न्यूयार्क 1953.
2. हीर, डेविड एम०, इकोनामिक डेवलपमेण्ट एण्ड फर्टिलिटी प्रोसीडिग्स ऑफ दि वर्ल्ड पापुलेशन कान्फ्रेन्स बेल ग्रेड 1965, वाल्यूम 2.
3. अग्रवाल एस० एन० (1972), भारत की जनसंख्या समस्या, टाटा मैक्ग्रा हिल कंपनी, मुम्बई।
4. सुनील कुमार श्रीवास्तव, निर्देशक, डॉ० प्रदीप कुमार पाण्डेय, जनांकिकीय संग्रमण एवं भारत का आर्थिक विकास एवं विश्लेषण 1998, पृ० सं० 1–2. म० गा० का० वि. वाराणसी।
5. चौबे, पी० के० (2000) भारत में जनसंख्या नीति, कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली सिन्हा, बी० सी० एवं पुष्पा सिन्हा (2011). ष्जनांकिकीय के सिद्धांत, मयूर पेपर वैक्स, नई दिल्ली।
6. मिश्रा प्रकाश (2012), ष्जननासिकीय साहित्य भवन प्रकाशन, दिल्ली।
7. एस० पी० सिंह, आर्थिक विकास एवं नियोजक एस० चन्द्र एण्ड कंपनी लिव रामनगर, नई दिल्ली।
8. डॉ० वी० सी० सिन्हा व पुष्पा सिंह, जनांकिकीय के सिद्धान्त।
9. डॉ० रंजना एस० जैन व शशि के० जैन, जनसंख्या अध्ययन पब्लिकेशन, जयपुर, बी0 सी0 सिन्हा व पुष्परा सिन्हा, जनांकिकीय के सिद्धान्त, मयूर पेपर वैक्स एस 95 सेक्टर 5, नोएडा।
10. दत्त, रूद्र एवं के. पी. एम. सुन्दरम (2010) भारतीय अर्थ व्यवस्था एस. चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली।
11. शर्मा जैन पारिक, शोध प्रणाली एवं साख्यिकी तकनीके, रमेश बुक डिपो जयपुर 2008.
12. ओझा बी.एल, भारतीय अर्थ व्यवस्था रमेश बुक डिपो जयपुर 2008.
13. Ackerman E-A and Population and Natural Resources in Hauser, P.M. Duncan, O.D. (Eds): The study of Population, University of Chicago Press, 1959.
14. Zetinsky W. A prolugue to population Geography Englewood Cliffs, Prentice Hall, N.J., 1966.
15. Clark, J. I, World Population and Food Resources Critique: Institute of British Geographers, Specials Publication 1969, No. 3 Sir Dubley Stamp Memorial vol.
16. Malthus, R. "Essay on the principal of population as it effects the future improvement of society" See in Ghose, B.N. Fundamentals Sterling of population Geography Publishers, New Delhi, 1995.
17. Sengupta, P Population, Formation of Economic Regions by Characteristics and Resource Development, in Sundram, K.V. and Nagia, Sudesh (eds): Population Geography, Heritiage Publisheres, New Delhi, Quoted by Bhale Rao in Bhartiya Krishi Arthanshastra.
18. P.K. Wattal, Population Problem in India. Sarkall, The Population, Explosion, Foreign, Policy Association.
19. Singh, Jasbir Density, Punjab Optimum Carrying Capacity of Land Caloric and Intensity of Population Pressure Change in (1951- 61): N. G. J.I. Varanasi, 1971, vol. 17.
20. Singh, V. R., Population Growth and Availability of Food Grains in Uttar Pradesh, India, Rural Systems, 1986, Vol IV No. 4.

*****